Vol III Issue VI July 2013 ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-6, July-2013

पूर्वोत्तर भारत में हिंदी का विकास–समस्या और समाधान

महासिंह पूनिया

सारांश : *निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल*
बिन निज भाषा ज्ञान की मिटत न हिय को सूल

हिंदी भारत की राजभाषा ह।, भारत के सभी राज्यों में हिंदी बोलने तथा समझने वाले लोग निवास करते हैं, इसलिए हिंदी को मातृभाषा भी कहा गया है । संवैधानिक दृष्टि से हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया है । आज पूरे विश्व में हिंदी को 80 करोड से अधिक लोक एवं समझते हैं । इतना ही नहीं हिंदी फिल्में एक साथ सैंकडों देशों में प्रचारित तथा प्रसारित होती है । आज हिंदी पत्रकारिता में विश्व की अन्य भाशाओं के मुकाबले अधिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं । इलैक्ट्रोनिक मीडिया के माध्यम से टी.वी. चैनलों वं रेडियो चैनलों के माध्यमों से आज हिंदी भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व की अग्रधी भाषा बनी हुई हैं । वर्तमान दौर में हिंदी पूरे भारत को एक सूत्र में बांधे हुए हुए है । भरत में कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक, कच्छ से लेकर अरूणाचल प्रदेश तक हिंदी भाषा बोलने तथा समजझाने वाले लोग निवास करते हैं । सन 1900 में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने सरस्वत पत्रिका के माध्यम से जिस हिंदी भाषा का अलख जगाया था । आज वह दीपक पूर्णतः अलोकित हो चुका है ।

प्रस्तावना

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों असम, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश और सिक्किम आदि राज्यों में हिंदी ने निरन्तर विकास किया है । इस प्रकार केंद्रीय हिंदी संस्थान , (के.एच.एस.) आगरा तथा नोर्थ इस्ट थ्रू सेंटर हिंदी डारेक्ट्रेट (सी.एच.डी.) , सैंट्रील इंस्टीटयूट ऑफ इंडियन लैग्वेजिज (सी.आई.आई.एल.) म्हैसूर, नोर्थइस्ट रिजनल लैंगवेजिज सेंटर गुवाहाटी, नोर्थ इर्स्टन हिल यूनिवर्सिटी नेहू, नोर्थ इस्ट विन्टर स्कूल ऑफ लिंगविस्टिक (एन.इ.डब्ल्यू.एस.ओ.एल.) तथा पूर्वोत्तर हिंदी अकादमी के माध्यम से पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी का विकास हो रहा है । शिलांग, धीमापूर, गुवाहाटी केन्द्रोंके माध्यम से सभी 8 राज्यों में हिंदी भाषा को निरंन्तर बढावा दिया जा रहा है, इसके लिए हिंदी लेखन, प्रशिक्षण, रोजगार, पठन–पाठन, अनुवाद, स्थानीय भाषा कोश की संभावनाओं को विकसित किया जा रहा है, इतना ही नही केंद्र सरकार ने वर्तमान वितवर्ष में पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति एवं प्रचार–प्रसार के लिए विशेष योजना तैयार की है । केंद्रीय हिंदी संस्थान शिलांग, नागालैंड, गुवाहाटी के माध्यम से हिंदी का प्रचार–प्रसार किया जा रहा हैं । जहां असम विश्वविद्यालय एवं तेजपुर यूनिवर्सिटी में पी.एच.डी. तथा डिग्री स्तर पर हिंदी पढाने की सुविधा है । वहीं असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिती स्कलों के लिए हिंदी पाठ्यक्रम की पुस्तकें तैयार कर रही है । पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी भाषा, साहित्य, फिल्मों, हिंदी गीतों, प्रवासी व्यापारियों, हिंदी सम्मेलनों, सांस्कृतिक अदान–प्रदानों, केंद्रीय कर्मचारियों, सामाजिक संस्थाओं तथा पर्यटन के माध्यम से हिंदी ओर अधिक विकसित हुई है । आज सम्पूर्ण पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी बोलने तथा समझाने वाले लोग निवास करते हैं ।

असम में हिंदी का विकास :–

असम राज्य में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या 51 है । पूर्वोत्तर राज्यों में असम में सबसे पहले हिंदी का प्रचार–प्रसार हुआ । यहीं पर सन 1934 में बाबा राघव दास गांधी जी के अनुयायी बनकर हिंदी प्रचार करने हेतु यहां पर पधारे । 3 नवम्बर, 1938 को गोपीनाथ बरदलै के प्रयासों से असम हिन्दी प्रचार समिती नामक संस्था का गठन किया गया । बाद में यही संस्था असम राश्ट्रभाशा प्रचार समिती के नाम से जानी गई । असम राज्य राष्ट्रभाशा प्रचार समिती का कार्यालय बदलकर जोरहाट किया गया । वर्तमान में यह संस्था पंजीकृत है और इसका अपना विधान है, इसके अंतर्गत समिती संचालित होती है । असम में हिन्दी के प्रचार–प्रसार में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिती की भूमिका केवल परीक्षा–संचालन और पाठ्य पुस्तकि–निर्धारण तक ही नही है । समिती ने अपना एक समृध्द केन्द्रीय पुस्तकालय विकसित किया है, जिसमें हिन्दी के अतिरिक्त संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, बंगला, असमिया तथा स्थानीय भाषाओं की लगभग दस हजार से अधिक पुस्तककें हैं । पुस्तकालय के साथ–साथ समिती के अपने प्रकाशन भी हैं, जिनकी संख्या लगभग 200 से अधिक है । असम राज्य में लगभग 51 स्वैच्छिक हिन्दी संस्थाएं हिन्दी के प्रचार–प्रसार में संलग्न हैं ।

असम के गुवाहाटी, जोरहाट जैसे बडे शहरों में जहां बाहरी राज्यों के लोग भी सम्पर्क में हैं, वहां ही मुख्यस सम्पर्क भाषा के रूप में उभरी है, किंतु सदूर ग्रामीण क्षेत्र अभी भी हिन्दी से अछूते हैं । राज्य के स्कूल–कॉलेजों में असमी या अंग्रजी ही शिक्षा का माध्यम है, हिन्दी कहीं–कहीं एक वैकल्पिक विषय के रूप में पढाई जाती है, इसलिए असम के बडे शहरों में तो सभी लोग हिन्दी जानने और समझने लगते हैं, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी नहीं समझते । इसका सबसे बडा कारण यह है कि असम के ग्रामीण क्षेत्रों में विकास कार्य बहुत धीमा रहा है, किन्तु अब शिक्षा का प्रचार–प्रसार बढ रहा है और प्रौद्योगिकी के इस युग में दूरदर्शन व मीडिया को जोर बढ जाने से हर ग्रामीण क्षेत्र में हिन्दी गाने, फिल्में आदि का बोलबाला बढ रहा है और जनसम्पर्क में भी तेजी आ रही है, तो ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब बोलचाल की हिन्दी विकसित हो रही है । विद्यालयों में हिन्दी भारतीय भाषा के रूप में नहीं पढाई जा रही है । असम विश्वविद्यालय में हिन्दी शिक्षक विद्यमान हैं । केन्द्र सरकार के कार्यालयों में हिन्दी अध्यापन के लिए प्राध्यापक हैं, जो विभिन्न के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिन्दी सिखाते है। गृह मंत्रालय द्वारा निर्मित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिती, सिल्वर द्वारा कार्यालयों में हिन्दी में कार्य करने का मूल्यांकन किया जाता है, कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं औ प्रतियोगिताओं का आयोजन करके पुरस्कार दिए जाते हैं, इसके परिणामस्वरूप कार्यालयों में हिन्दी का वातावरण बन रहा है ।

असम विश्वविद्यालय, सिलचर के हिन्दी विभाग ने हिन्दी प्रचार–प्रसा के कार्य को उर्जा गति प्रदान की है । सलगोई, खीपुर, दरगाकोना आदि अनेक स्थानों पर हिन्दी सम्मेलन आयोजित किए गए हैं । विभागों में हिन्दी कम्प्यूटर और अनुवाद पाठ्यक्रम परीक्षाएं उत्तीर्ण करके हिन्दी के प्रचार–प्रसार में अवश्य ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे । जनता सरकार से दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के सिलचर केन्द्रों से हिन्दी कार्यक्रमों का समय बढाने की मांग कर रही है । हिन्दी विषय के साथ केन्द्रीय नवोदय एवं एकल विद्यालयों से पढकर आने वाले विद्यार्थ भी हिन्दी प्रचार का बीडा उठाएंगे । इक्कीसवीं शताब्दी में निश्चित रूप से हिन्दी प्रचार–प्रसार को पंख लग जाएंगे ।

मेघालय में हिंदी का विकास :–

मेघालय राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, शिलांग की स्थापना 1972 में हुई इसके राज्यों में 40 से अधिक शिक्षण केन्द्र एवं 27 से अधिक परीक्षा केन्द्र हैं । इसका कार्य क्षेत्र मेघालय राज्य है । यह प्राथमिक से रत्न तक शिक्षा प्रदान क है । अपनी स्थापना से लेकर आगामी सोलह वर्श तक के इसमें सम्मिजित परीक्षार्थियों के आंकडे अत्यंत संतोषप्रद है ।

मेघालय की राजधानी शिलांग में हिंदी के प्रचार के लिए राष्ट्रभाषा विद्यालय भी खोला गया। इस विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के लिए छात्रवृत्ति व्यवस्था भी की गई । इस समिती ने अपने क्रियाकलापों से शीघ्र ही अपना लोकप्रिय स्थान बना लिया । समिती के कार्योंसे केन्द्र एवं राज्य सरकारें अत्यंत प्रभावित हुई । इस राज्य की अन्य प्रमुख स्वैच्छिक संस्थाएं है – मेघालय हिन्दी प्रचार परिशद्, शिलांग, पूर्वोतर हिन्दी अकादमी, मेघालय । पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी की स्थापना सन् 1990 में हुई । इसे 2003 में सरकारी मान्यता प्राप्त हुई । विगत् 10 वर्षो में इसने 100 से अधिक कार्यक्रम किए हैं । यह संस्था परिचय, प्रथमा और प्रवेशिका का शिक्षण करती है । इसके दोन शिक्षण केन्द्र हैं । इस दोनों शिक्षण केन्द्रों में हजारों छात्र हैं ।

मेघालय में यहां के मूल निवासियों के अतिरिक्त अन्य राज्यों के लोगों की संख्या भी कम नहीं है । बिहार, उत्तरप्रदेश, उडीसा, असम, बंगाल, नेपाल के भी बहुत लोग यहां काम करते हैं । शिलांग के व्यापारिक क्षेत्र में मारवाडियों का प्रमुख योगदान है । भाषा की दृष्टि से खासी, गारो, जैंतिया भाषाएं अपने–अपने समुदायों में प्रमुख रूप से बोली जाती है किंतु शिलांग में हिन्दी ही सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित है । अलग–अलग जनजाति समुदायों के लोग अन्य समुदाय के लोगों से वार्ता मुख्य रूप से हिन्दी में ही करते हैं अर्थात् मेघालय में हिन्दी ही प्रमुख सम्पर्क भाशा के रूप में उभर रही है ।

मणिपुर में हिंदी का विकास :–

मणिपुर पूर्वोत्तर का विशिष्ट राज्य है । इस राज्य में हिन्दी प्रचार का कार्य अपेक्षाकृत विलम्ब से हुआ । सन् 1953 में इस राज्य में मणिपुर हिन्दी परिषद्, इम्फाल की स्थापना हुई । एक वर्श पश्चात् सन 1954 से ही इस संस्था ने हिन्दी

की परीक्षाएं लेना प्रारम्भ कर दिया । चार वर्श पश्चात् सन् 1958 मे संस्था रजिस्टर्ड हुई । इस संस्था का प्रधान कार्यालय इम्फाल में स्थित है । इस संस्था का कार्य क्षेत्र मणिपुर राज्य तक ही सीमित है । मणिपुर में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या 20 से अधिक है ।

परिषद् का उद्देश्य हिन्दी भाषा और इसकी लिपि–देवनागरी के द्वारा राष्ट्र में भावनात्मक एकता एवं सांस्कृतिक समन्वय हेतु प्रयास करना है । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक तत्वों की अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली हिन्दी का निर्माण, विकास एवं प्रचार–प्रसार करना । हिन्दी के साथ–साथ क्षेत्रीय भाषाओं नागा, कुकी आदि का विकास एवं हिन्दी से इनका समन्वय स्थापित करना व हिंदी को बढावा देना आदि शामिल है ।

मणिपुर राज्य में इस समय लगभग 150 से अधिक परीक्षा केन्द्र संचालित हैं । प्रत्येक केन्द्र का अपना हिन्दी शिक्षण विद्यालय है । उन विद्याालयों से अब तक लगभग 2000 से अधिक हिन्दी में छात्र तैयार हो चुके हैं, जो हिन्दी शिक्षण का कार्य कर रहे हैं । परिषद् द्वारा प्रबोध विशारद् और रत्न परीक्षाओं को केन्द्र सरकार द्वारा क्रमशः मैट्रिक, इण्टर एवं स्नातक (बी.ए.) के समकक्ष मान्यता प्राप्त है । संस्थाओं के समृध्द पुस्तकालय है, जिसमें लगभग दस हजार से भी अधिक पुस्तकें हैं । संस्थाओं द्वारा शिक्षण, प्रशिक्षण और परीक्षा कार्यों के अतिरिक्त हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए अन्य कार्य भी किए जाते हैं । हिन्दी दिवस का आयोजन किया जाता है । स्थान–स्थान पर संगोष्ठियों का भी आयोजन किया जाता है, जिसमें हिन्दी के पठन–पाठन की आवश्यकता को निरूपित किया जाता है । इन गोष्टियों में हिन्दी के विद्वानों को स्थनीय जनता के समक्ष भाषण हेतु आमंत्रित किया जाता है । मणिपुर यूनिवर्सिटी में हिंदी विभाग की स्थापना है । जहां पर हिंदी के पढने–पढाने के साथ–साथ हिंदी में शोध एवं पी.एच.डी. की व्यवस्था भी है ।

नागालैंड में हिंदी का विकास :–

नागालैंण्ड में हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना आसान काम नहीं था । नागालैंण्ड के चुचइम्हांग में स्थित गांधी आश्रम के व्यवस्थापक श्री नटवर भाई ठक्कर थे । प्रसिध्द गांधीवादी आचार्य काका साहेब कालेलकर के अनुरोध पर श्री ठक्कर ने पांच युवक–युवतियों को हिन्दी सिखाने के लिए वर्धा भेजा । वर्धा में इन्हें पच्चीस रुपये मासिक छात्रवृत्ति देते हुए, इनके निःशुल्क भोजन, आवास एवं शिक्षण की व्यवस्था की गई । दो वर्ष में समिती की परिचय परीक्षा उत्तीर्ण कर ये पांचो छात्र वापस अपने प्रदेश आ गये और यहां इन्होंने हिन्दी प्रचार–प्रसार कार्य प्रारम्भ किया । जिन पांच छात्रों ने हिन्दी सीखने का प्रथम बार साहस जुटाया, वे थे– लिड तोम्बा, तुशीबा तकोबा, कु. रोड.सनला एवं कु. अनड.ला । वर्तमान में नागालैंड में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या 4 है । नागालैण्ड में अनेक परीक्षा केन्द्र स्थापित किए गए और प्रथम बार इनमें 28 परीक्षार्थियों को सम्मिलित किया गया । सन् 1957 में सात विद्यार्थी पुनः हिन्दी अध्ययन हेतु वर्धा आये । सन् 1987 तक 62 छात्र–छात्राओं ने वर्धा में हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया और अपने प्रदेश में आकर राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार किया । इस प्रदेश के दीमापुर नगर में समिती द्वारा सन् 1962 मे राष्ट्रभाषा विद्यालय स्थापित किया गया । इस तरह यहां नागालैण्ड राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, दीमापुर अस्तित्व में आई ।

नागालैण्ड में कोविद तथा रत्न परीक्षाओं को वर्धा से संचजित किया जाता है। सन 1997 से 200 तक कुल 1879 विद्यार्थी इन परीक्षाओं में सम्मिलित हुए । राष्ट्रभाषा हिन्दी शिक्षण संस्थान, दीमापुर के पूरे प्रदेश में 5 शिक्षण केन्द्र हैं इन केन्द्रों में अप्रैल 2000 तक विभिन्न परीक्षाओं में परीक्षार्थियों की कुल संख्या 81 थी। इस राज्य की प्रमुख स्वैच्छिक संस्थाएं हैं – नागालैण्ड भाषा परिषद्, कोहिमा, नागालैण्ड भाशा अकाडेमी, दीमापुर, अखिल नागालैण्ड हिन्दी शिक्षक संघ, कोहिमा । दीमापुर और कोहिमा में हिन्दी सम्पर्क भाषा के रूप में उभर रही है । यू. जी.सी.की ओर से केंद्रीय विश्वविद्यालय नागालैंड की स्थापना की गई है । इसके अतिरिक्त केंद्रीय हिंदी संस्थान के पाली तथा सागर में केंद्र स्थापित किए गए हैं । वर्तमान में इस प्रदेश में हिंदी निरन्तर विकसित हो रही है ।

त्रिपुरा में हिंदी का विकास :–

त्रिपुरा में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या में निरन्तर बढोतरी हो रही है । त्रिपुरा राज्य में भी राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा ने त्रिपुरा राष्ट्रभाषा विचार समिती की स्थापना की, जिसका मुख्यालय धर्मनगर में रखा गया । इस समिती द्वारा संचालित परीक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या 1977–1998 में 1103, 1998–1999 में 674, 1999–2000 में 499 थी । उपर्युक्त आंकडे सिध्द करते हैं कि सत्र 97–98 के बाद से परीक्षार्थियों की संख्या में जबरदस्त गिरावट आई है । त्रिपुरा में संचालित इस स्वैच्छिक हिन्दी संस्था के लगभग दस केन्द्र संचालित है, जहां प्राथमिक, प्रारम्भिक, प्रवेश, परिचय परीक्षाएं संचालित होती है । इन समस्त परीक्षाओं में अप्रैल 2000 तक कुल 397 परीक्षार्थियों ने भाग लिया था । इस राज्य की एक अन्य स्वैच्छिक संस्था है – त्रिपुरा राज्य राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, अगरतला । त्रिपुरा यूनिवर्सिटी अगरतला में स्थापित की गई है, जहां हिंदी के पढने–पढाने की सुचारू व्यवस्था है । आज हजारों की संख्या में यहां के युवा हिंदी पढ रहे हैं ।

मिजोरम में हिंदी का विकास :–

अन्य पूर्वोत्तर राज्यों की अपेक्षा मिजोरम में हिन्दी का प्रचार कार्य पर्याप्त विलम्ब से प्रारम्भ हुआ । राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा ने यहां विशेष ध्यान दिया । वर्तमान में यहां दो स्वैच्छिक कार्यरत है ।1.मिजोरम हिन्दी प्रचार सभा, आईलोज, 2.यूनिवर्सल कम्युनिकेशन हिन्दी सेंटर, आईलोज । मिजोरम हिन्दी प्रचार सभा, मिजोरम की प्रारम्भिक संस्था है, जो राष्ट्रभाषा महाविद्यालय संचालित करती हैं । इस महाविद्यालय में राज्य के दूरस्थ अंचलों से हिन्दी शिक्षण कराया जाता है । सभा द्वारा प्रबोध, विशारद् और प्रवीण परीक्षाओं को केन्द्र सरकार द्वारा क्रमशः मैट्रिक, इंटर एव बी.ए. के समकक्ष मान्यता प्राप्त है । प्रदेश की दूसरी संस्था यूनीवर्सल कम्युनिकेशन हिन्दी सेंटर की स्थापना 2000 में हुई । यह संस्था भी मिजोरम हिन्दी प्रचार सभा के साथ समन्वय कर हिन्दी के प्रचार–प्रसार कार्य कर रही है । हिन्दी सीखने वालों के लिए प्रतिवर्ष सभा द्वारा हिन्दी पुस्तकों का निःशुल्क वितरण किया जाता है । सभा का अपना एक समृध्द पुस्तकालय भी है । मिजोरम में जनजातियों का बाहुल्य है । समिती इन जातियों को हिन्दी सिखाने की ओर ध्यान दे रही है । मिजोरम राष्ट्रभाषा प्रचार समिती की गति यद्यपि अत्यंत धीमी है, पर विषम परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए यह अत्यंत संतोशप्रद कही जाएगी । मिजोरम में स्वैच्दिक हिंदी संस्थाओं की संख्या निरन्तर बढ रही है ।

मिजोरम सरकार ने प्रदेश में स्कूलों के माध्यम से राष्ट्रीय भाषा हिंदी को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक सार्थक कदम उठाएं हैं । स्कूली पाठ्यक्रमों में पहली से लेकर दसवीं कक्षा तक हिंदी भाशा को शामिल किया गया है । हिंदी शिक्षक संघ के प्रधान सी. डार्लियानथंगा के नेतृत्व में अनेकों हिंदी की संगोष्टियां आयोजित की गई । हिंदी शिक्षकों की भर्ती की गई है । दो हिंदी शिक्षण संस्थान में हिंदी प्रशिक्षण की सुविधा के साथ–साथ दो साल का हिंदी का डिप्लोमा तथा डिग्री देने का प्रावधान है । मिजोरम में 401 स्कूल प्राध्यापक भर्ती किए गए हैं । 826 प्राध्यापकों को माध्यमिक स्तर पर, 1187 प्राथमिक स्तर पर भर्ती किए गए हैं । अब तक 5000 से अधिक छात्र एवं छात्राएँ हिंदी का प्रशिक्षण विभिन्न स्तरों के संस्थानों से ले चुके हैं । मिजोरम हिंदी ट्रेनिंग कॉलेज के माध्यम से छात्रों को अनेक स्तरों पर हिंदी में प्रशिक्षण देकर उनके रोजगार के संभावनाओं को बढ़ाया जा रहा है । केंद्रीय हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र आईजोल, मिजोरम के माध्यम से प्रदेश में हिंदी का प्रशिक्षण दिया जा रहा है । मिजोरम में मिजोरम यूनिवर्सिटी आईजोल के माध्यम से हिंदी के पढाने की व्यवस्था की गई है। वर्तमान में डॉ. सुशील कुमार हिंदी अध्यक्ष के रूप में हिंदी के पठन–पाठन की प्रकिया इस प्रदेश में निरन्तर विकसित हो रही है ।

अरूणाचल प्रदेश में हिंदी का विकास :–

सन् 1970 मे राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा के मंत्री श्री शंकर राव लोढे ने अरुणाचल प्रदेश का दौरा किया । हिन्दी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर, 1974 को प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री प्रेमखान्दू खुंगन की उपस्थिति में सम्पन्न बैठक में उत्तर पूर्वांचल राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना की गई । लखीमपुर जिले में राश्ट्रभाशा महाविद्यालय का शुभारम्भ हुआ । इस महाविद्यालय में कोविद एवं रत्न परीक्षा सम्पन्न कराई जाती है । जिले में इसके 165 के लगभग केन्द्र हैं । ये केन्द्र सफलतापूर्वक संचालित हो रहे हैं । इस राज्य की अन्य प्रमुख स्वैच्छिक हिन्दी संस्था है – अरुणाचल प्रदेश हिन्दी समिति, नाहरलगून ।

अरुणाचल चीन की सीमा से जुडा हुआ क्षेत्र है, इसलिए यहां भारतीय सेना सदैव तैनात रहती है । अरुणाचल में भी मूल जनजाति समुदाय है, जिनकी अपनी संस्कृति और बोली–भाषाएं हैं, किंतु भारतीय सेना के प्रभाव से हिन्दी ही सम्पर्क भाषा बन गई है । सिक्किम में नेपाली समुदाय की प्रमुखता के कारण नेपाली भाषा स्थानीय रूप में प्रचलित है, किंतु हिन्दी मुख्य सम्पर्क भाषा है । वैसे भी देवनागरी लिपि होने के कारण नेपाली और हिन्दी बहुत निकट है इसलिए हिन्दी यहां सरलता से समायोजित हो जाती है । राजीव गांधी यूनिवर्सिटी अरूणाचल प्रदेश में स्थापित की गई है । इसके अतिरिक्त सी.बी.एस.सी. पाठ्यक्रम के तहत सभी स्कूलों में हिंदी पढाई जा रही है । अरूणाचल प्रदेश में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या 2 है ।

सिक्किम में हिंदी का विकास :–

2007 में केंद्रीय विश्वविद्याालय सिक्किम में स्थापित किया गया है । नोर्थ इस्ट रिजनल लैंग्वेजिज सेंटर के माध्यम से लिंगविष्टि एंड कल्चरल

डाक्यूमेंटेंशन ऑफ सिक्किम के माध्यम से हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढावा दिया जा रहा है । सिक्किम में स्वैच्छिक हिंदी संस्थाओं की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ रही है । यहां पर एक दर्जन से अधिक स्कूल स्थापित हैं, जिनके माध्यम से हिंदी का विकास हो रहा है । यहां पर विश्वविद्याालय में हिंदी पढने–पढाने की व्यवस्था है । सिक्किम का भू–भाग चीन से लगता है, इस कारण यहां पर भारतीय सेना के नौजवान हिंदी बोलते हैं और स्थानीय लोगों से घुले–मिले रहते हैं, इनके चलते भी सिक्किम में हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार बढा है । पिछले कुछ वर्षो में सिक्किम में भारत के अन्य राज्यों के पर्यटकों में अच्छी खासी वृध्दि हुई है , जिसका परिणाम यह है कि यहां के स्थानीय लोगों को हिंदी सिखने के लिए बाध्य होना पडा, इससे जहां एक ओर सिक्किम में पर्यटन के विकास को बढावा मिला वहीं पर दूसरी ओर हिंदी ने भी अपने पैर फैलाए ।

पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी के विकास के लिए समाधान एवं सुझाव :–

देश के पूर्वोत्तर क्षेत्र असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरूणाचल प्रदेश तथा सिक्किम में क्षेत्रीय भाषाएं अलग–अलग हैं जैसे असमी, खासी, गारो, नागामिस, मणिपुरी आदि । यहां के राजकाज राज्य स्तर पर उनकी अपनी भाशाओं में ही होता है अथवा अंग्रेजी का ही बोलबाला है, किंतु केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में भारत सरकार के नियमानुसार ही राजकाज हिन्दी में हो सकता है,

पूर्वोत्तर क्षेत्र में केन्द्रीय कार्यालयों में हिन्दी भाषी राज्यों के जो लोग कार्यरत हैं, वे भी हिन्दी में कार्य करने से कतराते हैं । हमें पहले इन हिन्दी भाषी कर्मियों को हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रेरित करना होगा । यह देखा गया है कि केन्द्रीय कार्यालयों में हिन्दी स्टाफ की भारी कमी है । भारत सरकार हिन्दी के पद–सृजन में बहुत कोताही कर रही है, जब कि इस क्षेत्र में ऐसे पदों को निर्धारित मानकों के आधार पर सृजित किया जाना चाहिए । हिन्दी प्रशिक्षण यहां पर व्यापक स्तर पर करने की जरूरत है । पूर्वोत्तर में केन्द्रीय कार्यालयों के लिए हिन्दी दिवस मनाना ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि एक दिन हिन्दी के नाम पर दिखावा करने से कोई ज्यादा लाभ नहीं है । हमें कम से कम इन क्षेत्रों में हिन्दी चेतना मास मनाना चाहिए और पूरे महीने आकर्षक कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए, जिसमें प्रतिभागियों को और अधिक प्रोत्साहन पुरस्कार दिए जाने चाहिए । हिन्दी दिवस मनाने की औपचारिकता भर रह गई है । इससे अब तक तो यहां पर कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है । पूर्वोत्तर क्षेत्र में हमें प्रोत्साहन पुरस्कार की राशियां बढाकर यह प्रावधान करना होगा कि लोग कार्यालयों में अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में ही करें । हर महीने प्रत्येक कार्यालय में कुछ न कुछ हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को आगे आना होगा और इस क्षेत्र में हिन्दी के प्रति जन–जागरण व्यापक स्तर पर कार्य करना होगा, तभी इस क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ सकता है । पूर्वोत्तर के राज्यों में हिन्दी का प्रचार–प्रसार हर दिन बढता ही जा रहा है और अब तो इस क्षेत्र में भी यह सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित हो गई है हिन्दी फिल्मों और गीत–गानों का इसमें बहुत बडा योगदान है । हिन्दी देश की एक पहचान और अस्मिता बनाए रखने वाली भाषा हे, यह जितनी वैज्ञानिक और तर्कसंगत है, उतनी ही सहज, सरल और प्रामाणिक भी है । पूर्वोत्तर भारत में हिन्दी के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए मेरे सुझाव निम्नलिखित हैं –

1.सरकारी स्तर पर सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी को बढावा देने का पुरजोर प्रयास करना चाहिए, जहां अत्यंत आवश्यक हों, जहां पर द्विभाषी व्यवस्था लागू की जा सकती है ।

2.पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी का हिन्दी को जन–जन तक प्रचारित करने में अनूठा योगदान है। इसे और ऐसी ही अन्य सभी स्वयंसेवी संस्थाओं के कार्यो को राजनीतिक व सरकारी स्तर पर व्यापक समर्थन मिलना चाहिए तथा इनके सुझावों को प्रमुखता से लागू किया जाना चाहिए ।

3.सरकारी शिक्षण संस्थानों में बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा के स्तर से ही हिन्दी का व्यावहारिक ज्ञान देना शुरु कर देना चाहिए ।

4.जन–जन में यह जागृति लाने का प्रयास किया जाए कि हिन्दी भाषा के माध्यम से हम राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के साथ–साथ अपना बहुमुखी विकास भी कर सकते हैं, अतः अधिक से अधिक हिन्दी को अपनाया जाना चाहिए ।

5.नुक्कड नाटक, पत्र–पत्रिकाओं, टीवी कार्यक्रमों व अन्य प्रचार माध्यमोंके साथ–साथ बुध्दिजीवियों को इस पहल में आगे आना चाहिए ।

6.अधिक से अधिक हिन्दी पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं के उपयोग को बढावा देना चाहिए, तभी यह संभव होगा कि पूर्वोत्तर भारत में ही हिन्दी अपने अपेक्षित स्वरूप में आ पायेगी ।

7.पूर्वोत्तर लोकभाषाओं, स्थानीय भाषाओं में लिखित साहित्य का हिन्दी में अनुवाद होना आवश्यक है और ठीक उसी प्रकार हिन्दी का साहित्य सभी उम्र वर्ग के लिए इन लोकभाषाओं, स्थानीय भाषाओं में अनूदित करारकर आम जनता और पाठकवर्ग तक उपलब्ध कराया जाना चाहिए । यह कार्य प्रांतीय सरकार करें, तो सोने पर सुहागा होगा ।

8.पूर्वोत्तर भारत में कम से कम जिला स्तर पर एक हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाना चाहिए। हिन्दी सीखने वाले युवकों प्रबुध्दवर्गो के लिए हिन्दी पत्राचार प्रशिक्षण कार्यक्रम की व्यवस्था भी अच्छा परिणाम दे सकती है । प्राथमिक पाठशालाओं में हिन्दी एक अनिवार्य विषय के रूप में पढाई जानी जाहिए । समयान्तराल से इसकी समीक्षा भी होनी चाहिए । हिन्दी प्रशिक्षण केन्द्र विशेष योजनाओं के अंतर्गत तहसील और ब्लॉक स्तर तक ला दिए जाए, तो हिंदी विकसित होगी ।

9.पूर्वोत्तर राज्यों के महानगरपालिका स्तर पर हिन्दी प्रचारिणी सभा का गठन होना चाहिए । दक्षिण भारत में इसका गठन अच्छा विकास का साधन बना है । हिन्दी सीखने वालों के लिए पुरस्कार योजनाएं भी प्रारम्भ की जानी चाहिए ।

10.पूर्वोत्तर राज्यों की संस्कृति, इतिहास और भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी आमजन तक पहुंचाने के लिए हिन्दी में लिखी जानी चाहिए । इसका व्यापक प्रचार–प्रसार करना चाहिए और इससे मनोरंजन, पर्यटन का विकास होगा । शुध्द हिन्दी और व्याकरण की पुस्तकों का वितरण प्राथमिक पाठशाला स्तर से किया जाना चाहिए ।

11.पूर्वोत्तर राज्यों में सर्वाजनिक हिन्दी पुस्तकालय खोले जाने चाहिए और उनमें निचले स्तर से उपरी स्तर तक की हिन्दी की सभी विधाओं की पुस्तकों का संग्रहण होना चाहिए । हिन्दी वाचनालय का विस्तार ग्राम्य स्तर तक किया जाए तो ग्रामीण वर्ग में उत्साह का संचरण होगा ।

12.पूर्वोत्तर राज्यों के सरकारी कर्मचारियों का स्थानान्तरण हिन्दी भाशी क्षेत्रों में कम से कम दो साल के लिए अनिवार्य किया जाना चाहिए । बैंक, दूरसंचार, ड रेल्वे, जल निगम, सार्वजनिक निर्माण विभाग और इसी प्रकार अन्य विभागों के कर्मचारियों पर इसे लागू किया जाना चाहिए । किसी भी कर्मचारी की किसी अ प्रांत में भर्ती पर कोई प्रतिबंध का चाबुक नहीं चलाना चाहिए ।

13.केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों के आपसी सहयोग से सब संभव है । व बैंक को ध्यान में रखकर कोई भी योजना लागू की जाती है वह सफल न हुई न सफल होने वाली है । देश सर्वोपरि है । देश हित को लक्ष्य बनाकर निजी त को भूलकर कार्य हो तो विकास दर शीर्ष बढ जाएगी ।

14.पूर्वोत्तर भारत के सम्पूर्ण विकास के समस्त मार्ग राष्ट्रभाषा हिन्दी द्वारा प्रशस्त किए जा सकते हैं । पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में आनेवाली समस्याओं के मद्देनजर पहाडी शिखरों तथा घने जंगलों के बीच बस्तियों में वि अक्षर–ज्ञान–अभियान चलाना होगा ।

15.वर्ण–परम्परा उत्पन्न और व्यवस्थित की जा सकती है । भारतीय सामाजिक विविधता का अल्पज्ञान देकर आठों राज्यों की समस्त बोलियों को सूचीबध्द कर पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी द्वारा स्थानीय भाषा परिषद् निर्मित करके, हिन्दी की उपयोगिता, आंतराष्ट्रीयतथ स्थानीय भाषाओंके साथ व्याकरणकीपयोगधार्मिताको व्याख्यायित की जानी चाहिए ।

16.हिन्दी प्रेमी युवक–युवतियों को हिन्दी का उत्तम प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित बनाया जा सकता है । हिन्दी सिनेमा के देशप्रेम गीतों, सामाजिक जीवन के मनोरंजनात्मक तत्वों तथा जगह–जगह नाट्यशाला के निर्माण से हिन्दी के प्रति प्रेम बढाना होगा ।

17.पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रभाषा के व्यापक प्रसार में हिन्दी विद्यालय समूह की स्थापना एक स्वस्थ कदम होगा । असम, अरूणाचल प्रदेश, मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, मिजोरम, सिक्किम तथा मेघालय की समस्त बोलियों का शब्दकोश बनाकर स्थानीय शब्दार्थ की समझ, सुलभ बनानी होगी ।

18.शब्दकोश में पूर्वोत्तर के आदिवासी तपस्वी जीवन की वेशभूषा, खान–पान तथा पर्व, व्रत, अनुष्ठानों के महत्व को भी विश्लेषित करते हुए इन्साहक्लोपीडिया बनाकर आम लोगों को रू–ब–रू करना होगा

अन्त में इतना ही कहा जा सकता है कि केंद्र सरकार पूर्वोत्तर में हिंदी को बढावा देने के लिए जो गम्भीर प्रयास कर रही है उसको ओर अधिक सजीदगी के साथ आगे बढाना होगा ताकि सम्पूर्ण भारत में हिंदी विकसित हो सके क्यों कि हिंदी भारत माता के माथे की बिन्दी है इसके बिना राष्ट्रीय अखण्डता एवं राष्ट्रीय एकता की परिकल्पना नहीं की जा सकती । अन्त में सभी भारतवासियों के लिए इतना ही कहना चाहूँगा कि –

ले ऑख मीच अन्याय देख, वह खून नहीं है पानी है ।
जिसको हिंदी से प्यार नहीं, वह कैसा हिन्दुस्तानी है ।।

संदर्भसूची

1.विश्व में हिंदी का विकास पृ. 264 : डॉ. महासिंह पूनिया संपादक, आलेख पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी का विकास, प्रकाशन : हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला –

2013
2.पूर्वोत्तर वार्ता 2012 – उर्मि कृष्ण, डॉ. अकेलाभाई संपादक
3.पूर्वोत्तर भारत में राष्ट्रभाषा हिंदी का विकास–समस्या और समाधान, पूर्वोत्तर वार्त– 2012: संजीव सौरभ,
4.मुनमुन सिंहा – पूर्वोत्तर राज्यों में हिंदी का प्रचार और प्रसार
5.राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास : सं. गंगाशरण सिंह,पृ. 61
6.स्वर्णांकिता : सं. रामेश्वर दयाल दुबे, पृ. 200
7.हिन्दी प्रचार का इतिहास : सं. गंगाशरण सिंह, पृ.26
8.तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन का प्रतिवेदन : सं. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृ.258
9.राष्ट्रभाषा प्रचार का इतिहास : सं. गंगाशरण सिंह, पृ. 61
10.स्वर्णांकिता : सं. रामेश्वर दयाल दुबे, पृ. 200
11.राष्ट्रभाषा (पत्रिका) : सं. अनन्तराम त्रिपाटी, जून 2000, पृ. 23

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net